अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : आठवीं - जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 06 जनवरी, 2019)

समय : 3 घण्टे अंक : 100

रोल नं.: (अंकों में) .....

(शब्दों में) .....

परीक्षा केन्द्र की कोड संख्या :

केन्द्राधीक्षक/निरीक्षक के हस्ताक्षर

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश–

सावधान

1. परीक्षा में नकल नहीं करें। 2. प्रामाणिकता से परीक्षा देकर ईमानदारी का परिचय दे। 3. मायावी नहीं मेधावी बनें। 4. नकल से नहीं अकल से काम लें।

1. सभी प्रश्नों के उत्तर इसी पत्रक में प्रश्न के नीचे/सामने छोड़े गये रिक्त स्थान में ही लिखें।
2. काली अथवा नीली स्याही का प्रयोग करें, लाल स्याही का नहीं।
3. उत्तीर्ण होने के लिए कम से कम 50 प्रतिशत अंक पाना अनिवार्य है अन्यथा अनुत्तीर्ण माना जाएगा।
4. अधीक्षक, पर्यवेक्षक एवं वीक्षक के निर्देशों का पालन करें।
5. कहीं पर भी अपना नाम अथवा केन्द्र का नाम नहीं लिखें।

जाँचकर्त्ता के प्रयोग हेतु–

प्रश्न क्र.	1	2	3	4	5	6	कुल योग
प्राप्तांक							
पूर्णांक	10	10	10	10	24	36	100
पुनः जाँच							

जाँचकर्त्ता के हस्ताक्षर

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 10x1 = (10)

(a) मनयोगी में जीव के कुल भेद हैं-

(क) 220 (ख) 212

(ग) 247 (घ) कोई नहीं ( )

(b) निम्न में से सबसे कम है-

(क) नरक (ख) तिर्यञ्च

(ग) मनुष्य (घ) देव ( )

(c) निम्न में से सबसे अधिक है-

(क) सम्यग्दृष्टि (ख) मिश्रदृष्टि

(ग) मिथ्यादृष्टि (घ) तीनों समान ( )

(d) परिहार विशुद्धि संयत में कितने उपयोग होते हैं-

(क) 7 (ख) 9

(ग) 8 (घ) 6 ( )

(e) उपशम समकिती में कितने योग होते हैं-

(क) 11 (ख) 13

(ग) 15 (घ) 09 ( )

(f) निम्न में से सबसे अधिक है-

(क) क्रोध कषायी (ख) मान कषायी

(ग) माया कषायी (घ) लोभ कषायी ( )

(g) पद्म लेश्या में गुणस्थान होते हैं-

(क) प्रथम सात (ख) अंतिम सात

(ग) 6 से 10 (घ) 5 से 10 ( )

(h) अपरीत में जीव आते हैं-

(क) अभवी (ख)कृष्ण पक्षी

(ग) दोनों (घ) सिर्फ भवी ( )

(i) क्षायिक भाव के भेद है-

(क) 21 (ख) 18

(ग) 09 (घ) 02 ( )

(j) सम्यग्दृष्टि जीव में कितने भाव मिल सकते हैं-

(क) 3 या 4 (ख) 4 या 5

(ग) 3,4 या 5 (घ) सिर्फ 3 ( )

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 10x1 = (10)

(a) वेदक समकित से तात्पर्य क्षायिक समकित के अंतिम समय से है। ( )

(b) अचरम में जीव के 563 भेद होते हैं। ( )

(c) अनिन्द्रिय में अंतिम तीन लेश्या मिलती हैं। ( )

(d) भाषक में जीव के पाँच भेद होते हैं। ( )

(e) इच्छापूर्वक नहीं किया गया आहार आभोग निर्वर्तित है। ( )

(f) आहार का थोकड़ा पन्नवणा सूत्र के 28वें पद में चलता है। ( )

(g) अशुभ योगी प्रमादी संयती अनारम्भी है। ( )

(h) भगवती सूत्र के 11वें शतक में आत्मारम्भी-परारम्भी का थोकड़ा चलता है। ( )

(i) दो या दो से अधिक भावों से मिले हुए को सान्निपातिक भाव कहते हैं। ( )

(j) प्रथम तीन गुणस्थानों में क्षायोपशमिक भाव नहीं मिलता है। ( )

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1 = (10)

(a)	वैक्रिय मिश्र काययोग में देवों के भेद	(क) 283	.....
(b)	एकान्त पुरुषवेद में जीव के भेद	(ख) प्रतिसमय	.....
(c)	सम्यग्दृष्टि में जीव के भेद	(ग) 33000 वर्ष	.....
(d)	असन्नी में जीव के भेद	(घ) अन्तर्मुहूर्त्त	.....
(e)	पृथ्वीकायिक का आहारेच्छा का जघन्य काल	(च) 27	.....
(f)	पहले देवलोक का आहारेच्छा का जघन्य काल	(छ) 184	.....
(g)	सर्वार्थसिद्ध देव का आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल	(ज) 13	.....
(h)	नारकी का आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल	(झ) पृथक्त्व दिवस	.....
(i)	अपूर्वकरण गुणस्थान में भाव के कुल उत्तर भेद	(य) 70	.....
(j)	सयोगी केवली गुणस्थान में भाव के कुल उत्तर भेद	(र) 191	.....

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1 = (10)

(a) मैं द्रव्य की स्वाभाविक शक्ति से ही आविर्भूत भाव हूँ। .....

(b) सिद्धावस्था में पारिणामिक भावों में से सिर्फ मैं ही मिलता हूँ। .....

(c) मुझमें जीव के 192 भेद मिलते हैं। .....

(d) मुझमें जीव के 6 भेद मिलते हैं। .....

(e) देवकुरु मेरा ही एक भेद है। .....

(f) मैं पाँचवें देवलोक के ऊपर रहने वाला किल्विषिक देव हूँ। .....

(g) सूक्ष्म एवं साधारण वनस्पति के अपर्याप्त तथा पर्याप्त मेरे अन्तर्गत शामिल है। .....

(h) तिर्यञ्च के भेदों में से अढ़ाईद्वीप के बाहर मैं नहीं मिलता हूँ। .....

(i) 102 बोल के वेद द्वार में मैं सबसे अधिक हूँ। .....

(j) सास्वादन समकिती से मैं संख्यात गुणा हूँ। .....

प्र.5 एक या दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **12x2 = (24)**

(a) जीवधड़े के आधार पर जीव के सभी शाश्वत भेद लिखिए।

.....

.....

.....

(b) 102 बोल में देवी से अधिक कौन-कौन तथा कितने गुणे हैं ?

.....

.....

.....

(c) 102 बोल में पर्याप्त द्वार की अल्पबहुत्व लिखिए।

.....

.....

.....

(d) ओजआहारी कौन कहलाते हैं ?

.....

.....

.....

(e) आहारेच्छा का उत्कृष्ट काल पृथक्त्व दिवस किनका है ?

.....

.....

.....

(f) आत्मारंभी किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(g) शुभ योगी किसे कहते हैं ?

.....

.....

.....

(h) आत्मारंभी-परारंभी के थोकड़े में संसारी जीव के कौनसे दो भेद बताये हैं ?

.....

.....

.....

(i) आत्मारंभी-परारंभी के थोकड़े अनुसार कापोत लेशी जीव कैसे होते हैं ?

.....

.....

.....

(j) क्षायिक भाव को परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

(k) 10 से 12वें गुणस्थान में औपशमिक भाव के भेद लिखिए।

.....

.....

.....

(l) सान्निपातिक भाव का चतुःसंयोगी कौनसा भेद है जो उपशम श्रेणी में मिलता है ?

.....

.....

.....

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार वाक्यों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) प्रथम गुणस्थान में क्षायोपशमिक भाव के 10 भेद लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(b) छठे गुणस्थान में औदयिक भाव के 15 भेद लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(c) जीवधड़े से गति द्वार की आठ मार्गणाओं में जीव के भेद लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(d) 4, 5 तथा 6 लेश्या में जीव के कुल भेद स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(e) उपशम समकित में देव के 111 भेद लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(f) पद्म लेश्या में देव के 26 भेदों को लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(g) धातकी खण्ड में मनुष्य के 54 भेदों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(h) मिश्रदृष्टि में जीवस्थान, गुणस्थान, योग, उपयोग तथा लेश्या लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(i) 102 बोल के थोकड़े के आधार पर दर्शन द्वार की अल्पबहुत्व लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(j) अनाकार उपयोग में 10वाँ गुणस्थान क्यों नहीं मानते हैं ?

.....

.....

.....

.....

.....

(k) अनाहारक में जीवस्थान, गुणस्थान, योग, उपयोग तथा लेश्या लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

(l) संयम द्वार में मिलने वाले योगों की संख्या क्रमवार लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....